NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

बड़े सयाने-बड़े चालाक

जानवरों की कहानियां—पूरब की

कला थैरानी

1982 (शक 1904)

© कला थैरानी, 1982

रु. **2.50**

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित, कपूर आर्ट प्रेस, ए-38/3, मायापुरी फेज़-1, नयी दिल्ली 110064 में फोटोकम्पोज होकर मेहता ऑफसेट वर्क्स, ए-16, नारायणा फेज़-2, नयी दिल्ली 110028 में मुद्रित।

नेहरू बाल पुस्तकालय

बड़े सयाने-बड़े चालाक

जानवरों की कहानियां—पूरब की

कला थैरानी

चित्रकार

पुलक विश्वास

अनुवाद

बालकराम नागर

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

खरगोश सयाना क्यों?

दोपहर का समय था। धूप खूब गरम और तेज़ थी। जंगल का राजा सिंह एक पेड़ के नीचे सुस्ता रहा था। शिकार के लिए मारे मारे फिरने से वह थक चुका था।

"जानवरों का राजा हूं मैं," वह मन में सोच रहा था, "भोजन के लिए इतनी दौड़-धूप क्यों करूं?"

फिर क्या था? हुक्म जारी कर दिया उसने कि सब जानवर सूरज डूबने तक उसकी मांद में इकट्ठे हों! सब जानवर हाजिर हो गये तो उसने कहा, "हर रोज़ शिकार को निकलता हूं मैं, और तुम मारे डर के जंगल में घूम-फिर नहीं पाते! तुममें से एक हर रोज़ सुबह मेरे पास आ जाया करें तो मुझे शिकार से छुट्टी मिल जाये और तुम सब आज़ादी से घूम-फिर सको। सोच लो, तुम्हारा जवाब आज ही चाहिए मुझे।"

सब जानवरों को यह प्रबन्ध ठीक लगा। लेकिन इसका फैसला कैसे हो कि उसके पास कब-कौन जाये?

बहुत सोच-विचार कर उन्होंने एक तरकीब निकाली। हर शाम मिलकर वे पर्चियां डालेंगे। जिसकी पर्ची निकलेगी वही सिंह का भोजन बनेगा।

इस तरकीब ने अच्छा काम किया। सिंह को रोज खाना मिल जाता और जानवर आज़ादी से घूमते फिरते। इतने खुश वे पहले कभी नहीं थे।

फिर आया वह दिन जब खरगोश की बारी आई। वह जाने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था। वह कह रहा था कि उस जैसे छोटे से जानवर से सिंह की भूख नहीं मिटेगी।

"मुर्खता मत करो," हिरण ने समझाया। "कभी-कभी हल्का खाना भी पेट के लिए अच्छा रहता है।"

दूसरे जानवरों ने भी ज़ोर दिया कि खरगोश को नियमों का पालन करना चाहिए।

"ठीक है, मैं चला जाऊंगा," खरगोश ने कहा, "लेकिन आप देखेंगे, मैं कल ही वापस लौट आऊंगा।"

सब जानवर उस पर हंसने लगे।

उस रात खरगोश इधर से उधर चक्कर काटता हुआ सोचता रहा। वह मरना नहीं चाहता था। "इस ज़ालिम से निबटने का उपाय निकालना होगा," अपने मन में उसने कहा।

पौ फटने तक एक तरकीब उसने सोच ली थी। फिर वह चैन से पांव पसार कर सो गया।

सोकर जब वह उठा तो दिन बहुत चढ़ चुका था। चहल कदमी करते हुए उसने अपना सफर शुरू किया। सिंह की मांद के निकट पहुंचते ही वह चिल्लाया, "आखिर मैं पहुंच ही गया सरकार!"

सिंह मांद से बाहर निकला। क्रोध से वह लाल-पीला हो रहा था। सुबह से वह बाट देख रहा था और अब छोटा सा एक खगोश खड़ा था उसके सामने, जबकि उस जैसे एक दर्जन खरगोश वह एक साथ हड़प कर सकता था।

नन्हें से जानवर को पंजे में दबोच कर वह दहाड़ा, "इतना इंतजार करना पड़ा मुझे, तुम्हारी यह मजाल?"

"सुनिए तो स्वामी," डर से थरथर कांपते हुए खरगोश ने विनती की। "मैं तो पौ फटते ही चल पड़ा था, लेकिन एक

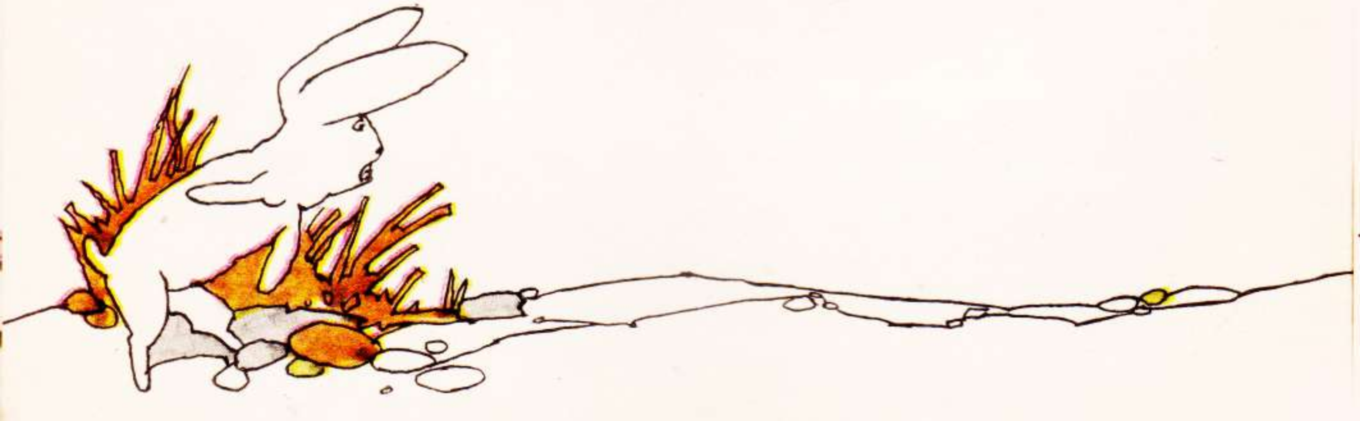

बहुत बड़े सिंह ने रास्ते में धर-दबोचा मुझे। वह कह रहा था कि वही जंगल का राजा है और सब जानवरों को उसका हुक्म मानना होगा।''

यह सुनते ही सिंह की भूख उड़ गयी और पंजे में जकड़े खरगोश को उसने नीचे गिरा दिया।

''मैं हूं इस जंगल का राजा। मुझ से ज्यादा तगड़ा, मुझ से ज़्यादा ताकतवर कोई नहीं है,'' उसने गरज कर कहा, ''चलो दिखाओ मुझे कौन है वह बदज़ात?''

खरगोश ने सिर हिलाया। ''नहीं, नहीं, सरकार! मुझे तो उसकी परछाईं से भी डर लगता है। आप भी उससे न मिले। आप उसका मुकाबला नहीं कर सकते।''

''मैं कहता हूं ले चलो मुझे उसके पास। जब तक सफाया नहीं कर दूंगा उसका, चैन नहीं लूंगा।''

''वह बड़ा शक्तिशाली है, मालिक...''

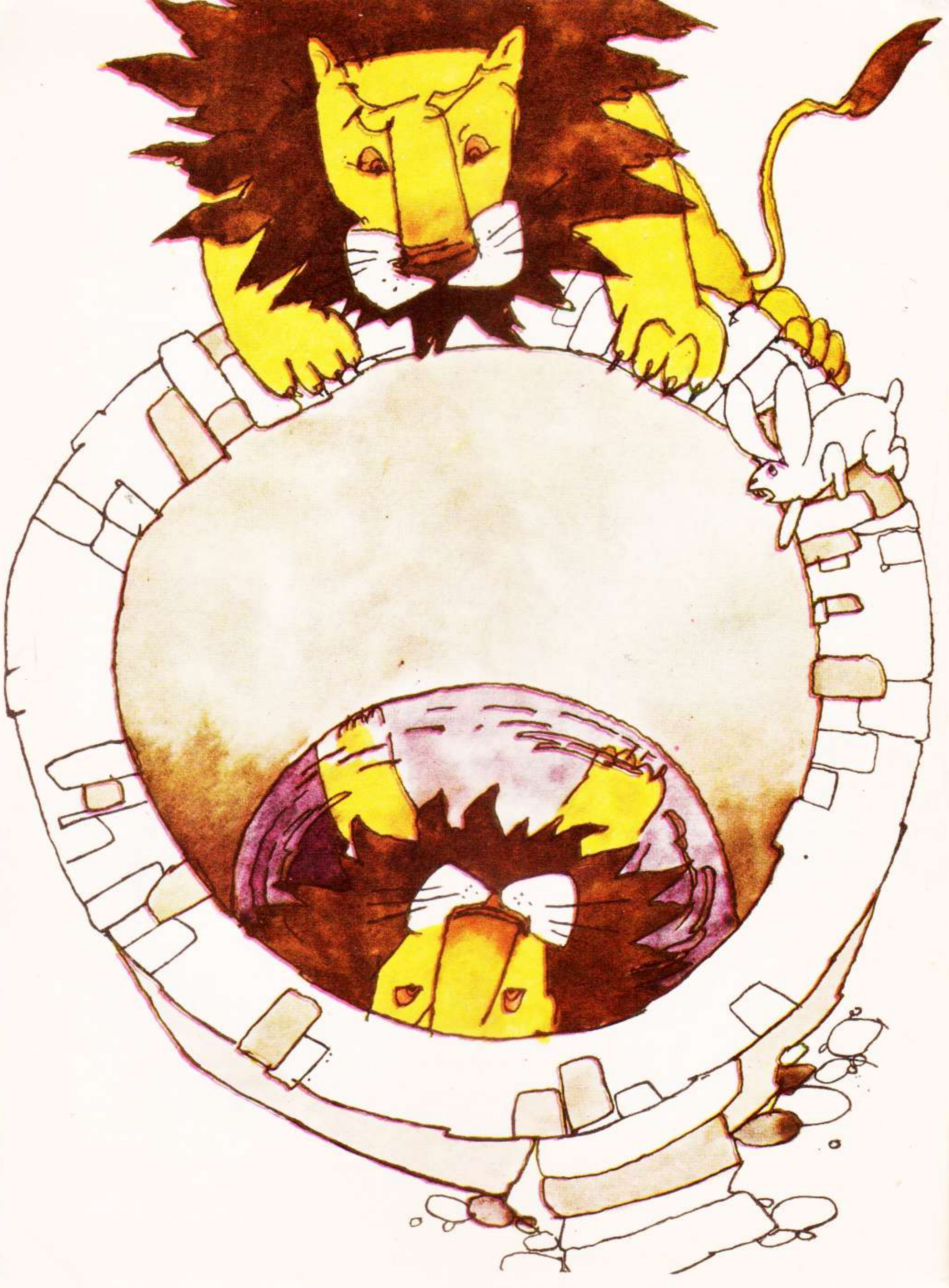

''बहस मत करो। आगे-आगे चलकर रास्ता दिखाओ, नहीं तो अभी कचुमर निकाल दूंगा।''

खरगोश सिंह को एक ऐसी जगह ले गया, जहां पर एक गहरा कुंआ था।

''वह नीचे रहता है—इसके अंदर,'' खरगोश ने कुएं के भीतर इशारा करते हुए कहा। ''मैं आपके पांव पड़ता हूं, उसे लड़ाई के लिए न भड़काइयेगा।''

सिंह और निकट बढ़ आया और कुएं में नीचे झांक कर उसने देखा। उसकी परछाईं उसे घूर रही थी।

''देखो तो, कैसे आंखें फाड़े घूर रहा है मुझे।'' सिंह ने सोचा और पूरी शक्ति से वह दहाड़ा। उसकी गरज ने गूंज बनकर उसका जवाब दिया। फिर तो सिंह उस पर झपटने को तैयार हुआ। उसकी परछाईं ने भी उसी तरह से धमकी दी।

क्रोध में पागल सिंह उस पर जैसे ही झपटा कि लुढ़कता हुआ कुएं के भीतर जा गिरा।

''हाय! हाय!'' सिंह के कराहने की आवाज़ कुएं की गहराई में से धीमी धीमी सुनाई दी। पानी में कुछ देर हाथ पांव मारने के बाद सिंह डूब गया।

खरगोश ने कुएं में झांक कर देखा। ''अब कभी वह हमें तंग नहीं करेगा,'' उसने कहा और चैन की सांस ली। फिर भागा भागा वह गया और सब जानवरों को यह बात बतायी।

फिर तो खूब खुशियां मनाई गईं। नन्हें खरगोश के चारों ओर घेरा डाल कर जानवर नाचने लगे। खरगोश को कंधों पर उठा कर उसकी जय-जयकार करने लगे।

उसी दिन से खरगोश को सयाना कहा जाने लगा। सभी जानवर उसके पास अपनी उलझनों का हल ढूंढने और हर तरह की मदद के लिए जाने लगे।

(बर्मी लोक कथाओं में खरगोश को बहुत बुद्धिमान बताया जाता है)

शिवालू और हाथी

एक दिन दोपहर ढले जंगल में घूमते हुए शिवालू गीदड़ ने एक हाथी देखा जो कुछ देर पहले ही मरा था। उसकी लाश के चारों तरफ चक्कर लगा कर गीदड़ ने उसकी मौत का कारण जानना चाहा। जब यकीन हो गया उसे कि हाथी अपनी मौत मरा है तो शिवालू ने उसे खाने की ठानी। शिवालू ने हजार कोशिश की, मगर वह उसकी खाल को काट नहीं पाया।

अचानक उसने सिंह के क़दमों की आहट सुनी। ''अब मेरा भोजन हाथ से गया!'' उसने मन में कहा। लेकिन शिवालू ऐसा गया-बीता भी नहीं था कि झट हार मान लेता।

सिंह जब सामने आया तो गीदड़ ने ज़मीन पर माथा रगड़ते हुए बड़े आदर से कहा, ''हुज़ूर! आदाब अर्ज़ करता हूं। मैं आप ही के लिए इस हाथी की पहरेदारी कर रहा हूं। आइए, नाश्ता कीजिए।''

गीदड़ की बातों से सिंह फूला न समाया। इस बात का घंमड करते हुए कि जो दूसरों का है, उसे वह कैसे ले सकता है, सिंह ने इंकार करते हुए कहा, ''भले साथी, यह हाथी तुम्हारा है। किसी दूसरे का मारा हुआ मैं नहीं खाऊंगा।'' और शेर चलता बना।

शिवालू ने चैन की सांस ली। अपने भोजन पर वह मुंह मारने ही जा रहा था कि अचानक एक बाघ कहीं से आ धमका।

''मुसीबत अकेली नहीं आती!'' गीदड़ होंठों ही होंठों में फुसफुसाया। ''अब इस बदमाश को कैसे चलता करूं?'' सिंह पर तो चापलूसी काम कर गई, लेकिन बाघ से किसी और तरह निबटना होगा। तभी बिजली की तरह एक विचार उसके दिमाग में कौंधा!

तेज़-तेज़ डग भरता वह बाघ के पास पहुंचा। यह बहाना करते हुए कि वह किसी चीज से डर रहा है, कभी इधर और कभी उधर देखकर वह बोला, "चाचा जी! आप बड़े गलत समय पर आये हैं। सिंह ने अभी-अभी इस हाथी को मारा है और लौटने तक मुझसे इसकी रखवाली करने को कह गया है। और हां, बाघों से वह बेहद नाराज़ है। मुझसे कह गया है, कोई बाघ इधर फटके तो झट उसे खबर करूं।"

"हमारा कसूर क्या है?" उलझन में पड़े बाघ ने पूछा।

लगता है एक बार उसने किसी हाथी को मारा था। उसकी पीठ पीछे कोई बाघ आकर उसके शिकार पर हाथ साफ कर गया। बस तभी से उसने बाघों का सफाया कर डालने की कसम खायी है।"

बाघ ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "भला हो तुम्हारा शिवालू! बताओ तो ज़रा कि सिंह किस ओर गया है, मैं उससे उलटी दिशा में जाऊंगा।" और जैसे ही चालाक गीदड़ ने पंजा उठा

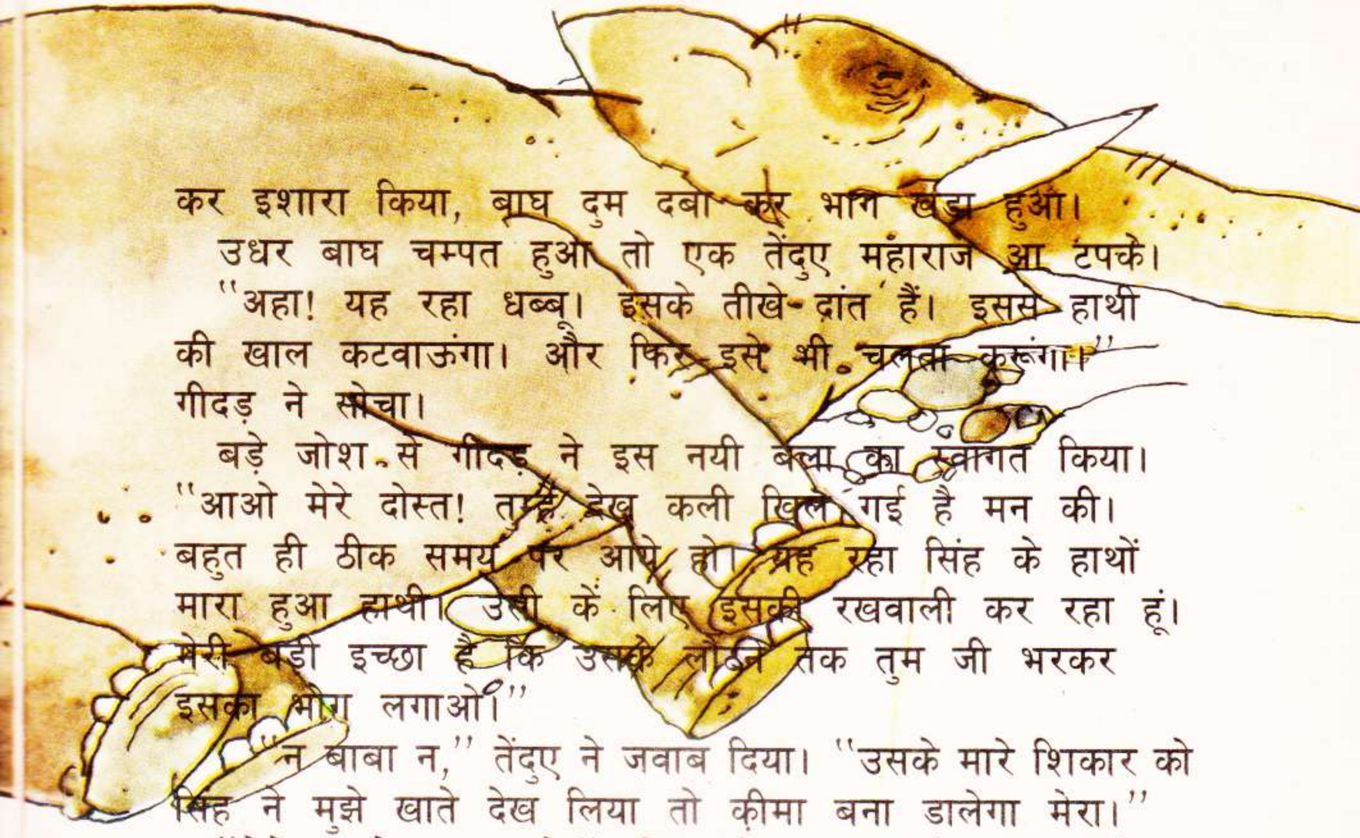

कर इशारा किया, बाघ दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ।

उधर बाघ चम्पत हुआ तो एक तेंदुए महाराज आ टपके। ''अहा! यह रहा धब्बू। इसके तीखे दांत हैं। इससे हाथी की खाल कटवाऊंगा। और फिर इसे भी चलता करूंगा।'' गीदड़ ने सोचा।

बड़े जोश से गीदड़ ने इस नयी बला का स्वागत किया। ''आओ मेरे दोस्त! तुम्हें देख कली खिल गई है मन की। बहुत ही ठीक समय पर आये हो। यह रहा सिंह के हाथों मारा हुआ हाथी। उसी के लिए इसकी रखवाली कर रहा हूं। मेरी बड़ी इच्छा है कि उसके लौटने तक तुम जी भरकर इसका भोग लगाओ।''

''न बाबा न,'' तेंदुए ने जवाब दिया। ''उसके मारे शिकार को सिंह ने मुझे खाते देख लिया तो क़ीमा बना डालेगा मेरा।''

''ऐसे डरपोक न बनो,'' गीदड़ ने कहा। ''मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूं क्या?'' टकटकी लगाये देखता रहूंगा। जैसे ही कदमों की आहट सुनायी देगी तुम्हें सावधान कर दूंगा।''

भरोसा करके तेंदुए ने हाथी की खाल पर दांत चलाना शुरू किया और देखते ही देखते उसकी खाल काट कर रख दी। तभी गीदड़ ने हुआं-हुआं की तान छेड़ दी। ''जल्दी करो, जल्दी करो! सिंह आ रहा है।''

तेंदुए ने दायें देखा न बायें और जिधर उसका मुंह था उसी ओर तीर की तरह ओझल हो गया।

अब तक सांझ ढल चुकी थी। अंधेरे ने एक चादर की तरह सारे जंगल को ढक लिया था। इस शान्ति और एकान्त को शिवालू ने बड़े संतोष से निहारा और फिर डट कर खाने बैठ गया।

(भारत में गीदड़ की चालाकी मशहूर है)

महाराज की सेवा में

एक बूढ़ा सिंह एक चट्टानी गुफा में अकेला रहता था। जो कुछ आसानी से मिल जाता उसी पर वह संतोष कर लेता। दूर जाकर शिकार करना अब उसके वश की बात नहीं थी।

गर्मियों में एक दिन बैठा बैठा, अपनी हालत पर सोचविचार कर रहा था कि उससे कोई मुलाकात करने आया।

"प्रणाम करता हूं, महाराज!" गीदड़ ने सिर झुका कर कहा, "आप इतने उदास क्यों दिखाई दे रहे हैं?"

"हर रोज़ एक जैसा भोजन करते-करते मैं तंग आ चुका हूं," सिंह ने आह भर कर जवाब दिया। "एक मुद्दत हो गयी है मुझे जंगली सूअर का ताज़ा मांस खाये हुए। मैं हूं

कि दूर जा नहीं सकता और सूअर है कि मेरे पास तक नहीं फटकते।"

"मैं किस मर्ज़ की दवा हूं, श्रीमान! जंगली सूअर को लेकर आता हूं आपके पास," गीदड़ ने वादा किया।

जंगल में इधर उधर घूमने के बाद आखिर एक सूअर उसे दिखायी दे गया, जो पेड़ की छाया में सुस्ता रहा था।

उसके निकट जा कर गीदड़ ने कहा, "मैं तुम्हें ही सब जगह ढूंढ रहा था।"

"क्यों? क्या बात है?" जंगली सूअर ने पूछा।

चट्टानी गुफा की ओर इशारा करते हुए गीदड़ बोला, "तुम जानते ही हो कि हमारा राजा बूढ़ा हो चुका है। अब वह अपनी जगह किसी को राजा बनाना चाहता है। यह रुतबा वह तुम्हें देना चाहता है।" सूअर के चेहरे से लग रहा था मानो उसे विश्वास न हो रहा हो। गीदड़ झट से बोला, "तुम्हें यकीन न हो तो चलकर अपने आप देख लो।"

अब तो सूअर फूल कर कुप्पा होने लगा। "राजा बनना कितनी बड़ी बात होगी।" वह सोचने लगा, "क्या शान-शौकत होगी मेरी! सब जानवर मेरे सामने सिर झुकायेंगे।"

वह एकदम उठकर खड़ा हो गया। "मैं तुम्हारे साथ चलता हूं," उसने कहा।

दोनों सिंह की गुफा की तरफ चल पड़े। जब गुफा कुछ कदम दूर रह गयी तो गीदड़ बोला, "अब तुम अकेले जाओ। महाराज बाहर बैठे हैं। उन्हें देखते ही प्रणाम करो और राजपाट संभाल लो।"

जंगली सूअर आगे बढ़ा। सिंह ने जैसे ही उसे देखा, उठ खड़ा हुआ और एक दम उस पर लपका। डर से चकराये हुए सूअर ने पंजों से सिंह को पीछे धकेला। सिंह धड़ाम से जा गिरा और सूअर बेतहाशा भाग खड़ा हुआ।

जंगली सूअर को भागते देख, गीदड़ सिंह के पास आया। "आपने सूअर को पकड़ा क्यों नहीं?" उसने पूछा।

टूटे हुए मन से सिंह ने जवाब दिया, "मानता हूं भूल मेरी है। क्या करूं! मुझ में पहले जैसी चुस्ती-फुरती नहीं रही। अफसोस! जंगली सूअर अब कभी मुझे नहीं मिलेगा।"

सिंह को इतना उदास देख, गीदड़ बोला, "ज़्यादा दुखी न हों। सूरज डूबने से पहले मैं फिर जंगली सूअर को आपके पास लाकर दिखाऊंगा।"

गीदड़ ने वही रास्ता पकड़ा जिधर सूअर दुम दबाकर भागा था। वह उसे एक नदी के किनारे खड़ा नज़र आया।

थर-थर कांपते और बुरी तरह हांफते हुए उसे देख कर लगता था जैसे बेहोश होकर अभी गिर पड़ेगा।

"क्या बात है?" गीदड़ चिल्लाया। "क्या कोई बिजली टूट पड़ी थी तुम पर जो इस तरह भाग खड़े हुए?"

"तुम यह कैसे कह सकते हो, दोस्त! जो हुआ उसे देखने को तुम वहां थे ही कब?"

"आखिर हुआ क्या?" गीदड़ ने कहा, "टिके रहते वहां तो राजा हो गये होते। वनराज तो बस तुम्हें आदर देना चाहते थे। सोचो ज़रा, वे खाना चाहते तुम्हें तो क्या बच सकते थे तुम?"

सूअर ने सिर हिलाया, "शायद तुम ठीक कहते हो। मुझे खाने का ही उनका इरादा होता तो आसानी से बच कर निकलने न देते मुझे।"

"चलो मेरे साथ। मैंने महाराज से तुम्हें एक और अवसर देने को कहा है," गीदड़ बोला।

दोनों उलटे पांव लौट चले। जब गुफा के निकट पहुंचे तो गीदड़ ने उससे कहा, "अब बेखटके आगे बढ़ो प्यारे! और सिंह से कहो कि सिंहासन तुम्हें सौंप दे।"

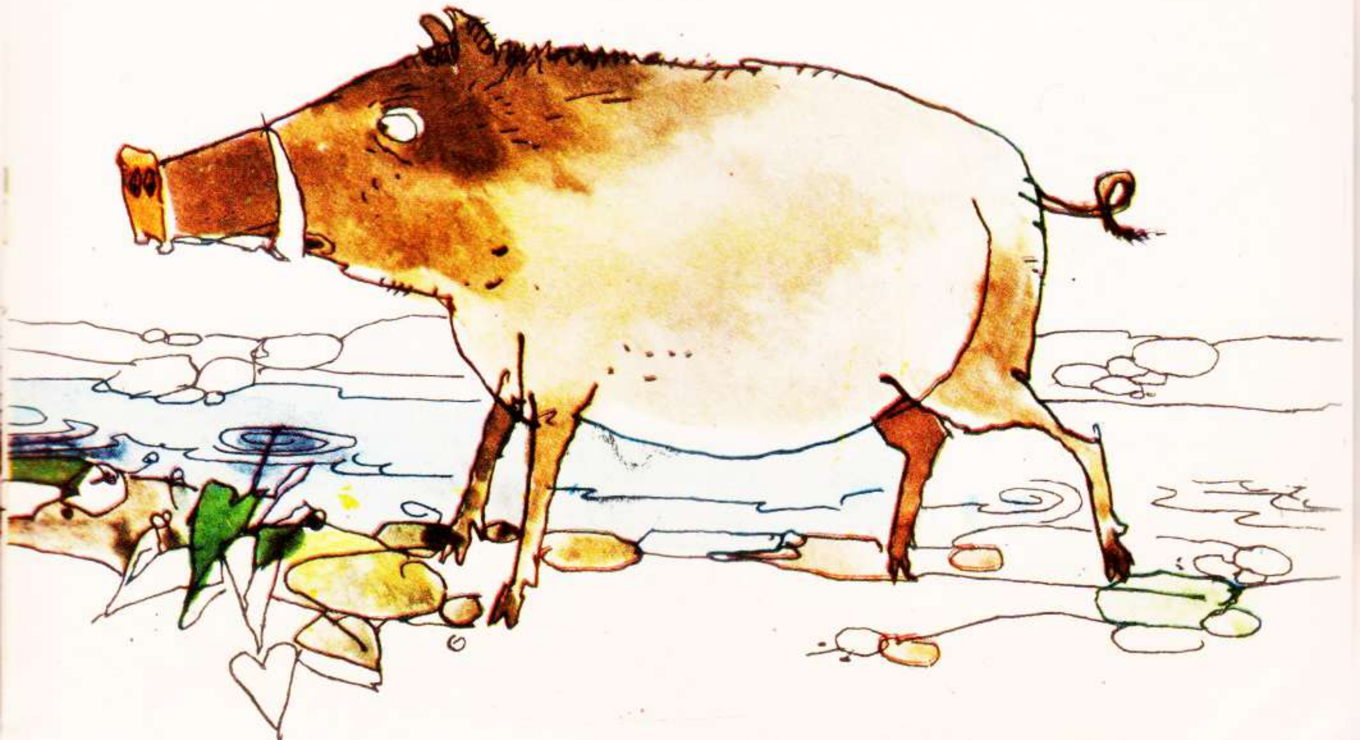

सूअर धीरे धीरे कदम रखता हुआ सिंह के सामने पहुंचा और आदर से अपना सिर झुका लिया। उसकी आंखें अभी जमीन पर ही गड़ी थीं कि इसी बीच सिंह झपट कर उस पर टूट पड़ा। सबसे पहले जंगली सूअर की गर्दन को मजबूती से पकड़ कर सिंह ने तोड़ डाला, फिर उसके सिर की हड्डी को तोड़ा। बड़े संतोष से घुरघुराते हुए, सिंह उसके दिमाग पर हाथ साफ करने ही को था कि गीदड़ ने पंजा उठा कर कहा, "नहीं सरकार, नहीं।"

"क्यों नहीं?" सिंह ने हैरानी से पूछा।

"क्या राजा लोग इस ढंग से खाना खाते हैं? आपके शरीर पर खून लगा है। नदी पर जाकर पहले आपको नहाना-धोना चाहिए।"

बात मान कर सिंह नहाने चला गया।

सिंह के पीठ मोड़ते ही गीदड़ ने मौके का फायदा उठाया और जंगली सूअर के दिमाग को झटपट चट कर गया। फिर ऐसे बैठ गया जैसे कोई चौकीदारी कर रहा हो।

सिंह जब लौटा तो बड़ा साफ साफ लग रहा था। यह सोचकर कि मज़ेदार भोजन उसका इंतजार कर रहा है, ललचायी हुई उसकी आंखें चमक रही थीं। सूअर की खोपड़ी को पंजों में पकड़ कर सिंह ने उलटा किया और उसका दिमाग ढूंढने लगा।

चकित होकर उसने पूछा, "दिमाग़ कहां है?"

गीदड़ ने और भी हैरानी का बहाना किया। "किसका दिमाग?"

"सूअर का, और किसका?" बेसब्री से सिंह ने जवाब दिया।

गीदड़ हंसा। "आप ही सोचिए, उसके पास अगर दिमाग होता तो एक बार मौत के मुंह से बच कर दुबारा उसी फंदे में क्यों फंसता?

(श्रीलंका की कहानियों का चालाक जानवर गीदड़ है)

दावत के साथ

तिब्बत की एक घाटी के ऊपरी भाग में वसंत ऋतु की सुहानी भोर हुई। पंछी चहचहा उठे। जाड़े भर एक जगह बंधे रहने के बाद जानवर खुली हवा में सांस लेने बाहर निकले। एक भूखा भेड़िया भोजन की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। आखिर उसे एक छोटा सा क्यांग, जंगली गधा, जो कोई एक बरस का होगा, नयी-नयी उगी दूब में मुंह मारता हुआ दिखाई पड़ा।

"अहा, कैसा तर माल हाथ लगा।" यह सोचता हुआ भेड़िया उस पर झपटने ही वाला था कि कयांग ने उसे देख लिया। "भेड़िया चाचा, थोड़ी मेहरबानी करो। अभी मत खाओ मुझे," बेचारे कयांग ने गिड़गिड़ा कर कहा। "कड़ाके की सर्दियों में हड्डियां निकल आयी हैं मेरी, पतझड़ तक मैं दुगुना मोटा हो जाऊंगा, फिर मज़े से खा लेना मुझे।"

भेड़िया मान गया। "अच्छा, अच्छा। छः महीने बाद यहीं पर मिलना," उसने कहा।

पतझड़ आने पर भेड़िया क्यांग से मिलने निकला। पहाड़ियों पर से गुज़रते हुए एक लोमड़ी उसे मिली।

"बड़ी जल्दी में मालूम होते हो?" लोमड़ी ने कहा। "कहां की तैयारी है?"

"एक मोटे-ताज़े क्यांग को मिलने का समय दे रखा है आज," भेड़िया बोला। उसने यह भी बताया कि छः महीने पहले कैसे उन्होंने यह मुलाकात तय की थी।

लोमड़ी नहीं चाहती थी कि वह पीछे रहे। बोली, "तो क्या इतने मोटे-ताजे क्यांग को अकेले ही चट करने का इरादा है? कहो तो मैं भी चलूं तुम्हारे साथ?"

"हां हां, बड़ी खुशी से," भेड़िये ने जवाब दिया और दोनों साथ-साथ चलने लगे।

रास्ते में एक खरगोश मिला "नमस्ते। किधर जा रहे हो दोनों?" उसने पूछा।

भेड़िये ने सब बात बतायी।

क्यांग के लिए खरगोश को बड़ा अफसोस हुआ। जान है तो जहान है। पहाड़ियों और चारागाहों में घूमना फिरना जीते-जी का मज़ा है। इन दरिन्दों के लिए एक भोली-भाली जान क्यों जाए? खरगोश ने क्यांग को बचाने की ठानी, लेकिन उसे यह भी ध्यान था कि भेड़िया और लोमड़ी उस पर किसी तरह का शक न करने पाएं।

"क्यांग बहुत बड़ा जानवर होता है," खरगोश ने कहा। "उसे समूचा खा गये तो बीमार पड़ जाओगे। क्या मैं भी तुम्हारा साथ दूं?"

"एक से भले दो, दो से भले तीन," भेड़िये ने जवाब दिया। अब तीनों मिलकर चलने लगे।

मिलन-स्थल निकट आने पर उन्होंने देखा कि नन्हा क्यांग एक पेड़ के नीचे खड़ा उनका इंतज़ार कर रहा है। उसकी आंखों में निराशा और उदासी झलक रही थी, मगर अब वह पहले से बड़ा और मोटा नज़र आ रहा था। भेड़िया होंठों पर जीभ फेरने लगा। ललचायी हुई उसकी आंखें चमक रही थीं।

"देखो उसकी ओर। कैसी बढ़िया दावत रहेगी," उसने अपने साथियों से कहा।

क्यांग की गरदन को भेड़िये ने पकड़ा ही था कि खरगोश ने उसे रोक दिया, "मेरे दोस्तो! इतने सुन्दर डीलडौल वाले क्यांग को इस तरह खत्म करना, बरबादी ही नहीं एक भद्दा तरीका भी है। इससे तो इसका दम घोंट देना अच्छा है। इसका शरीर तो ज्यों का त्यों समूचा बना रहेगा, हमारे लिए।"

भेड़िये और लोमड़ी को उसकी बात जंच गई।

"अब, सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। उधर पहाड़ी पर चरवाहे की झोंपड़ी है। उससे एक रस्सा उधार मांग कर लाता हूं।"

खरगोश भागता हुआ गया और भागता हुआ ही लम्बा रस्सा लेकर लौट आया। उसने एक सिरे पर गांठ लगा कर बड़ा-सा फंदा बनाया और दूसरे सिरे पर दो छोटे फंदे तैयार किए।

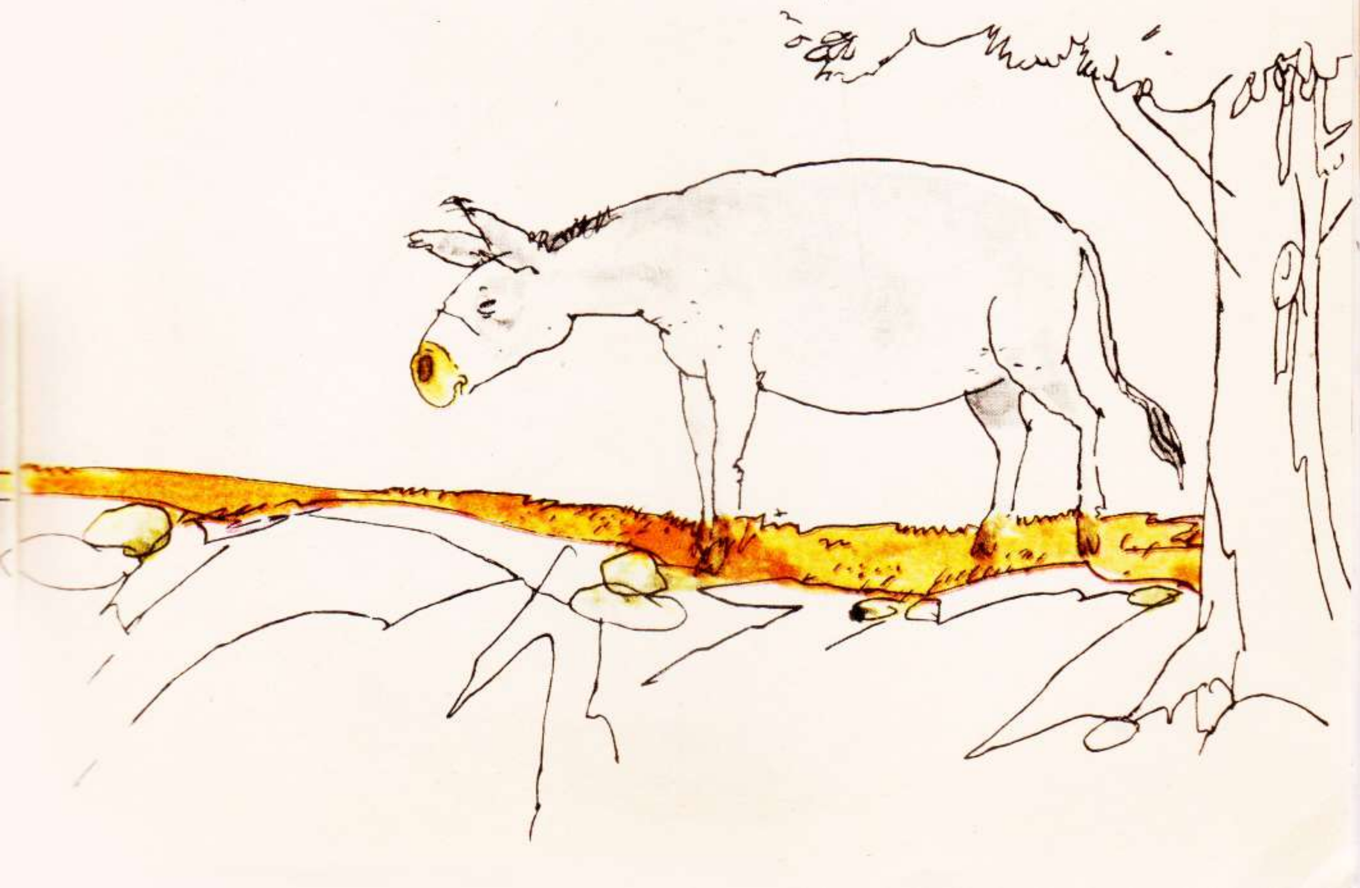

"अब कान लगाकर सुनो," उसने कहा। "क्यांग बड़ा मज़बूत जानवर है। हम तीनों को ज़ोर लगाना पड़ेगा—उसका दम घोंटने के लिए। बड़ा फंदा तो हम उसकी गरदन में डाल देंगे। दूरवाले छोर पर छोटे फंदों को तुम दोनों थामे रहना। बीच में लटकने वाले हिस्से को मैं दांतों तले कसकर दबा लूंगा। मेरा इशारा पाते ही तुम ज़ोर-से खींचना शुरू कर देना।"

यह कह, बड़ा फंदा तो उसने क्यांग के गले में डाल दिया और छोटे फंदों को भेड़िये और लोमड़ी की गरदनों में लटका दिया। बीच के हिस्से को उसने अपने दांतों में जकड़ लिया।

"खींचो," खरगोश चिल्लाया।

जानवरों ने खींचना शुरू किया। क्यांग कुछ कदम आगे

सरक आया। भेड़िये और लोमड़ी को लगा कि दोनों जमीन पर घिसटते चले जा रहे हैं और उनके फंदे कस-कस कर उनका दम घोंट रहे हैं।

"ज़ोर से खींचों," खरगोश चिल्लाया और बीच की रस्सी को उसने एकाएक छोड़ दिया।

भेड़िया और लोमड़ी मुंह के बल धड़ाम से जा गिरे। उनके फंदे फांसी के फंदे बन चुके थे।

खरगोश ने क्यांग की गरदन से-फंदा निकाला और उसे आज़ाद कर दिया। उसे खुशी थी कि दिन में एक अच्छा काम उसने कर लिया था।

(तिब्बती पहाड़ियों में खरगोश कमज़ोरों का मददगार है)

गुत्थी किसने सुलझायी?

एक बार दो आदमियों में एक कुल्हाड़ी पर झगड़ा चल रहा था। ''कहां है वह कुल्हाड़ी जो पिछले साल तुमने मुझ से उधार ली थी?'' एक कह रहा था।

''बता तो दिया है कि दीमक खा गई उसे,'' दूसरा जवाब दे रहा था।

''यह असंभव है। तुम झूट बोल रहे हो।''

''यह सच है।''

उनकी बहस बढ़ती चली गयी। समझौते की सूरत नज़र न आने पर उन्होंने मामला बादशाह सुलेमान के सामने रखने की ठानी।

बादशाह ने दोनों को बड़े ध्यान से सुना और फिर कोई गवाह पेश करने के लिए कहा। दोनों ने सिर हिला दिया। इस पर बादशाह ने हुक्म दिया कि पलांदुक नाम के मूषक हिरण को मशवरे के लिए बुलाया जाए।

मूषक हिरण झट हाज़िर होकर बादशाह के सामने पेश हुआ। सारा किस्सा सुनाकर बादशाह ने उसकी राय मांगी।

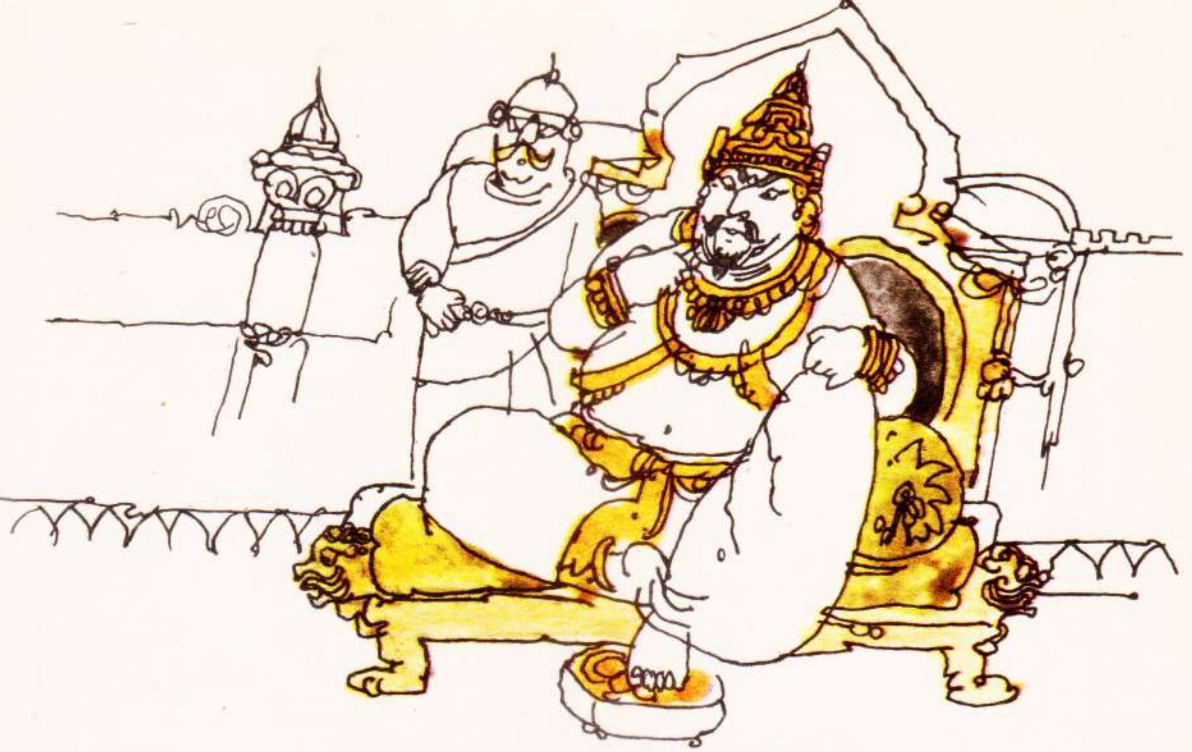

"माफी चाहता हूं, बादशाह सलामत! मैं ज़रा जल्दी में आया था," उसने कहा,"अगर आप का हुक्म हो तो पहले मैं नहा-धो आऊं।"

बादशाह ने इजाज़त देते हुए कहा,"जाओ, लेकिन जल्दी लौटना।"

जब पलांदुक नदी की ओर जा रहा था तो रास्ते में एक ऐसी जगह आई जहां जमीन से घास काट कर जला दी गयी थी। वह उसी राख पर गिरकर लोटने लगा। इसके बाद वह बादशाह के पास लौट आया।

"यह क्या तमाशा है?" बादशाह ने पलांदुक को देखते ही पूछा।

"क्या बताऊं हुजूर। जैसे ही वहां पहुंचा तो देखता हूं कि नदी में आग लगी हुई है। इस डर से कि लपटें कहीं आपके महल तक न आ जाएं, उन्हें फैलने से रोकने के लिए

मैं नदी में कूद गया,''पलांदुक ने जवाब दिया,''इसी लिए तो मैं राख से लिपटा हुआ हूं।''

बादशाह और उसके वज़ीरों ने घूर कर मूषक हिरण की तरफ देखा। जीवन में ऐसी बेतुकी बात उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी।

''तुम सोचते हो कि इस बेसिर पैर की बात पर हम यकीन कर लेंगे?'' बादशाह ने पूछा।

''लेकिन यह सच है, अन्नदाता।'' पलांदुक ने जवाब दिया।

बादशाह बहुत नाराज़ था। ''गुस्ताख की यह मजाल। इतने बड़े बादशाह से मज़ाक करने की हिम्मत कैसे हुई इसे?''

बादशाह की आवाज़ में सख्ती थी, ''मैं तुम्हें खबरदार करता हूं मूषक हिरण। यह मजाक करने की जगह नहीं है। यहां किसी से भी पूछ देखो कि इस तरह की बात कभी मुमकिन हो सकती है? यह नामुमकिन है, नामुमकिन!''

घुटने टेक कर मूषक हिरण ने कहा,''आप और यहां मौजूद सब लोग अगर मेरी बात पर यकीन नहीं कर रहे हैं तो आप सबने कुल्हाड़ी उधार मांगने वाले पर किस तरह यकीन कर लिया? आप कहते हैं कि नदी में आग नहीं लग सकती; तो क्या दीमक कुल्हाड़ी चट कर सकते हैं?''

बादशाह खामोश था। पलांदुक का मतलब वह समझ गया था। बात बिल्कुल साफ हो चुकी थी। उधार लेने वाला झूठ बोल रहा था। बादशाह सुलेमान ने (उधार लेने वाले को) हुक्म दिया कि फौरन वह कुल्हाड़ी उसके मालिक को लौटाए।

पालंदुक की मदद के लिए बादशाह ने उसका अहसान तो माना ही, मूषक हिरण को ढेर सारे इनाम देकर उसे जंगल का मुंसिफ (न्यायाधीश) भी बना दिया उस दिन से जितने भी मामले बादशाह सुलेमान के यहां पेश होते, पलांदुक उन सब में पंचफैसला देता।

(मलेशिया के जंगलों में सूझबूझ और हाज़िर जवाबी में पलांदुक का जवाब नहीं)

पवित्र गड्ढा

एक दिन कांशिल नाम का मूषक हिरण किसी किसान के घर की तरफ से गुज़रा। सामने का दरवाज़ा खुला हुआ था। किसान और उसकी बीवी धान के खेत में काम करने गये थे। भीतर झांके बिना कंशिल से रहा न गया। उसने जो देखा तो बाछें खिल गयीं। ताजा ताज़ा ढेर-सा पकवान केले के पत्तों में बंधा रखा था। चुपचाप दबे पांव वह अन्दर जा घुसा और पकवान में जा मुंह मारा। गज़ब का स्वाद था। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा टुकड़ा काटा। फिर जो बचा रह गया, मुंह में दबा कर बाहर निकल आया और खाते-खाते चलने लगा। खाने में वह इतना मस्त हो गया कि सुध-बुध ही खो बैठा और अचानक सिर के बल लुढ़क कर गड्ढे में जा गिरा। चूने का यह गड्ढा किसान ने बनाया था।

कूद कर बाहर निकलने की बहुत कोशिश की, लेकिन गढ़ा काफी गहरा था। अब तो वहीं बैठा-बैठा लगा सोचने।

कुछ देर बाद माजन बाघ ने गड्ढे के किनारे से नीचे झांक कर देखा। कांशिल ने झट से केले का पत्ता आंखों के सामने रख लिया और घूर घूर का उसे देखने लगा। "तुहान! तुहान!" (हे ईश्वर! हे ईश्वर!) उसने रटना शुरू किया।

"तुम ईश्वर का नाम क्यों ले रहे हो?" बाघ ने पूछा

कांशिल ने जैसे सुना ही न हो। वह केले के पत्ते पर ही नज़रें गड़ाये रहा, मानो उस पर लिखा कुछ पढ़ रहा हो।

"आज कयामत का दिन है। केवल वहीं बचेंगे जो पवित्र गुफा में आकर शरण लेंगे। तुहान! तुहान!"

"कौन कहता है आज कयामत का दिन है?"

आंखें तरेर कर कांशिल ने ऊपर देखा। "देख नहीं रहे तुम, मैं पवित्र पुस्तक का पाठ कर रहा हूं?" चिढ़कर उसने कहा। "बीच में तुम टोक क्यों रहे हो?" और जैसे पाठ को जारी रखते हुए वह बोलता रहा, 'उस रोज़ जब सूरज आधा ही दिखायी देगा, और हवा खूब तेज़ चल रही होगी, दुनिया का खातमा हो जायेगा। देखा! देखो! सूरज आधा ही नज़र आ रहा है। सुनो! सुनो। हवा कैसे सांय-सांय कर रही है। हां-हां! आज ही कयामत का दिन है। केवल वहीं बचेंगे जो चूने के इस पवित्र गढ़े में आकर शरण लेंगे।"

बाघ को कंपकंपी छूटने लगी। "क्या मैं भी गढ़े में आ जाऊं?"

"नहीं! तुम पाक-पवित्र नहीं हो," कांशिल ने जवाब दिया।

"मैं पाक हूं।"

"नहीं, तुम हर समय छींकते रहते हो। पाक जगह पर छींकना उजड्डपन है।"

"मैं वायदा करता हूं, छींकूगा नहीं।"

कांशिल ने जैसे केले के पत्ते से पढ़ना शुरू कर दिया,"जो किसी पाक जगह को छींक से नापाक करेगा, उसे बाहर फेंक दिया जायेगा।"

"मैं नहीं छींकूंगा, नहीं छींकूंगा। पक्का वायदा करता हूं।", बाघ ने कहा और गढ़े में कूद गया।

"मेरा ध्यान मत बटाओ," कांशिल ने कहा और रटना शुरू कर दिया, "तुहान, तुहान! हमें आफत से बचाओ।"

तभी बॉबी नाम के जंगली सूअर ने गढ़े के किनारे से नीचे झांका। "इधर ईश्वर का नाम कौन ले रहा है?" उसने पूछा।

"आज कयामत का दिन है," बाघ ने जवाब दिया।"कांशिल ने पवित्र पुस्तक में पढ़ा है, केवल वहीं बचेंगे

जो चूने के पवित्र गढ़े में आकर शरण लेंगे।''

बॉबी सहम गया। ''मैं भी आ रहा हूं नीचे—आपके पास!''

''नहीं'' कांशिल बोला, ''तुम हमेशा छींकते रहते हो। पवित्र पुस्तक में लिखा है, जो पाक जगह को छींक से नापाक करेगा, उसे बाहर फेंक दिया जायेगा।''

''कसम खाता हूं मैं नहीं छींकूंगा,'' जंगली सूअर ने कहा और नीचे कूद आया। केले के पत्ते पर नज़रें गड़ाये, कांशिल प्रार्थना करता चला जा रहा था, ''हे ईश्वर! रक्षा करो, रक्षा करो, हे ईश्वर!''

इधर नीचे कौन ले रहा है ईश्वर का नाम?''

बाघ और सूअर ने ऊपर देखा तो गज (हाथी) को नीचे झांकते हुए पाया।

''तुम सब छिपे हुए क्यों हो?''

''कांशिल ने पवित्र पुस्तक में पढ़ा है कि आज कयामत का दिन है और केवल वही बचेंगे जो चूने के पवित्र गढ़े में आकर शरण लेंगे।''

मारे डर के हाथी की सूंड हिलने लगी। ''मैं भी नीचे आ रहा हूं।''

नहीं, नहीं, नहीं,'' नीचे से तीनों एक साथ चिल्लाये। ''तुम पाक नहीं हो। तुम छींकते बहुत हो और वह भी खूब ज़ोर-ज़ोर से। पवित्र पुस्तक में लिखा है—पाक जगह को छींक से नापाक करने वाला बाहर फेंक दिया जायेगा।''

''मेहरबानी करो, नीचे आने दो मुझे,'' हाथी ने चिरौरी करते हुए कहा, ''मैं बिलकुल नहीं छींकूंगा। सूंड पर खड़ा

हो जाऊंगा, ताकि छींक आये ही नहीं।"

हाथी को नीचे आने दिया गया। चारों एक दूसरे से सट कर बैठै थे और कांशिल आंखों के आगे केले का पत्ता थामे पाठ कर रहा था "तुहान! तुहान!"

पाठ को अचानक बीच में रोक, अपनी नाक को कस कर उसने पकड़ लिया।

"ऐसा न हो!" उसने कहा, "ऐसा न ह...ह...ह...आचूछीं!"

"इसने पाक जगह को नापाक कर दिया है," जानवर गुस्से से चिल्लाये। फिर खूब कस कर उसे पकड़ा और उठा कर गड्ढे से बाहर फेंक दिया।

(इंडोनेशिया के, जंगली जानवरों के नायक कांशिल की अनोखी सूझ-बूझ प्रसिद्ध है)

रु. 2.50